तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

विद्यालय पत्रिका

सत्र 2018 – 19

केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश

KENDRIYA VIDYALAYA RISHIKESH

Phone No. / दूरभाष : 0135 – 2455063

Website : https://rishikesh.kvs.ac.in **Email :** mail.kvrishikesh@gmail.com

संतोष कुमार मल्ल, आई० ए० एस
आयुक्त , केन्द्रीय विद्यालय संगठन
Santosh Kumar Mall , IAS
Commissioner, Kendriya Vidyalaya Sangathan

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
18 संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली—११० ०१६
दूरभाष : 91— 11—26512579, फैक्स : 91—11– 26852680
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi—110 016

फ० 1-1/2019-केविस/का०स०/आयुक्त

संदेश

यह जानकर अपार हर्ष हुआ है कि केंद्रीय विद्यालय, ऋषिकेश अपनी वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है | विद्यालय पत्रिका हमेशा से नवोदित रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच बनी है, साथ ही विद्यालय में साल भर चली गतिविधियों एवं उपलब्धियों को उजागर करने का भी माध्यम है। मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह पत्रिका अधिक से अधिक बच्चों के अंदर छिपे रचनात्मक कौशल का विस्तार करेगी | किसी भी पत्रिका में पहली बार नाम छपना एक सुखद अनुभूति होती है, मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देता हूँ, जिनकी रचनाएं इस पत्रिका में प्रकाशित होने जा रही हैं |

आशा है कि पत्रिका को आकर्षक एवं रचनात्मक बनाने के लिए प्रकाशन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जैसे- शोध, सामग्री चयन व डिज़ाइन आदि पर विशेष ध्यान दिया जाएगा, जिससे पाठकों के हाथ में एक रचनात्मक एवं त्रुटिहीन पत्रिका पहुंचे। इसे ई-पत्रिका के रूप में वर्षवार विद्यालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध किया जाए, ताकि पत्रिका का ई-संकलन वर्षों बाद भी सबके लिए उपलब्ध हो |

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्राचार्य को हार्दिक शुभकामनाएं

संतोष 3/9/19

(संतोष कुमार मल्ल)
आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सी रविशंकर, आई०ए०एस०
C. Ravishankar, IAS

उत्तराखण्ड राज्य

जिलाधिकारी कार्यालय, देहरादून
दूरभाष : 0135—2622389, ईमेल : dehradundm@gmail.com
District Magistrate Office, Dehradun

अर्धशासकीय पत्र संख्या—1785/सी०पी०ओ०/2019—20

संदेश

यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई है कि विगत वर्षों की भांति केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश ई पत्रिका 2018—19 प्रकाशित करने जा रहा हैं | विद्यालय स्तर पर इस तरह के प्रकाशन बच्चों को सृजनशील बनाते हैं | आशा है कि पत्रिका में देश निर्माताओं, महापुरुषों, देश प्रेम तथा शिक्षा में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों से जुड़े विचारों का समावेश किया जाएगा, जो निश्चित रूप से अध्ययनरत छात्र / छात्राओं के लिए प्रेरणादायक एवं पाठकों के लिए लाभप्रद साबित होगी |

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी, प्राचार्या सहित सम्पूर्ण विद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं |

(सी० रविशंकर)
जिलाधिकारी , देहरादून
व अध्यक्ष विद्यालय प्रबंध समिति
केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, देहरादून संभाग
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN, DEHRADUN REGION
क्षेत्रीय कार्यालय, सालावाला, हाथीबड़कला , देहरादून (उत्तराखंड)
वेबसाइट : www.kvsrodehradun.in/ ईमेल : ackvsroddr@gmail.com
दूरभाष : 0135—2749510 (DC) , 2743192 (AC), 2746371 (AO)

फ० विद्यालय पत्रिका/2019/के०वि०सं०/देहरादून/

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय, ऋषिकेश सत्र 2018-19 की विद्यालय पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है।

विद्यालय पत्रिका विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों का एक प है। इसके द्वारा उभरते रचनाकारों व सृजनशील प्रतिभाओं को अपनी सृजनात्मक क्षमता को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्राप्त होता है और उसे परिमार्जित करने का एक सुनहरा अवसर मिलता है।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई देता हूँ और इसकी सफलता की मंगल कामना प्रेषित करता हूँ। मुझे उम्मीद है कि पत्रिका में सभी आयु वर्ग के विद्यार्थियों को उचित स्थान प्रदान किया जाएगा और उनके विशिष्ट कार्यों का उल्लेख किया जाएगा ।

(विनोद कुमार पाण्डेय)
प्रभारी उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश, उत्तराखंड
KENDRIYA VIDYALAYA RISHIKESH, UTTARAKHAND
CBSE Affiliation No : 3500034 School Code: 84070
Phone No. / दूरभाष : 2455063
Website : https://rishikesh.kvs.ac.in Email : mail.kvrishikesh@gmail.com

F-1392350/पत्रिका/2018-19/KVR

प्राचार्या की कलम से

मुझे यह सूचित करते हुए अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश सत्र 2018-19 की विद्यालय ई-पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है | वास्तव में विद्यालय पत्रिका, विद्यालय का एक दर्पण होती है जिसमें विद्यार्थी गतिविधियों की छोटी से छोटी छवि को स्पष्ट देखा जा सकता है, विद्यार्थियों की अंतनिर्हित प्रतिभाओं को उजागर किया जा सकता है जो उनके प्रोत्साहन के लिए एक आधार-स्तम्भ होगी, आत्मविश्वास दृढ करेगी, जिज्ञासु बनाएगी साथ ही रचनात्मक कौशल का विकास करेगी |

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विशवास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में उक्त गुणों का विकास करेगी और पूरे विद्यालय-परिवार को गौरवान्वित करेगी |

इस पत्रिका के सृजन में अहम् भूमिका निभाने वाले समस्त कार्मिकों को हृदय से धन्यवाद, सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं और समस्त विद्यार्थियों को स्नेहिल आशीष |

सुधा गुप्ता

(सुधा गुप्ता)
प्राचार्या

सम्पादकीय दृष्टि में.......

सत्र 2018-19 के लिए , विद्यालय ने गत वर्ष की भांति वार्षिक ई-पत्रिका प्रकाशित करने का निश्चय किया है। यह पत्रिका त्रिभाषिक - हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में है। बच्चों ने अपनी बातों को मौलिक व संगृहीत दोनों रूपों में व्यक्त किया है | बच्चों द्वारा विविध विधाओं – कविता, कहानी, आलेख, पहेली, व चुटकुले आदि का प्रयोग करते हुए रोचक व अर्थपूर्ण बनाया गया है। इसके साथ छायाचित्र भरे रंगीन पृष्ठों ने विद्यालय के अविस्मरणीय पलों को साकार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यालय का नाम रौशन करने में जिन छात्रों ने अथक प्रयास किया उनके नाम गौरव पृष्ठ पर अंकित करते हुए विद्यालय को अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है | इसके साथ वार्षिक प्रगति आख्या को विद्यालय की समस्त गतिविधियों के दस्तावेज़ के रूप में देखा जा सकता है।

मैं सम्पादकीय मण्डल के सभी साथी शिक्षकों व छात्रों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनके कारण से ई- पत्रिका का सम्पादन हो सका। इसके साथ समस्त स्टाफ सदस्यों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने पत्रिका सम्पादन कार्य में अपना सहयोग दिए।

अंत में विद्यालय की कर्मठ, सुयोग्य व प्रेरणादायी प्राचार्या आदरणीय श्रीमती सुधा गुप्ता के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके प्रोत्साहन व निर्देशन के फलस्वरूप, यह ई – पत्रिका आपके कर कमलों में है। सभी को ढेर शुभकामनाओं के साथ –

जानकीरमण झा
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
प्रमुख सम्पादक

सम्पादकीय मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री विनोद कुमार पाण्डेय
प्रभारी उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन देहरादून संभाग

संरक्षक

श्री सी० रविशंकर
जिलाधिकारी, देहरादून ,
अध्यक्ष—विद्यालय प्रबंध समिति

उप – संरक्षक

श्री प्रेम लाल
उप जिलाधिकारी ऋषिकेश
एवं नामित अध्यक्ष—विद्यालय प्रबंध समिति

निर्देशक

श्रीमती सुधा गुप्ता
प्राचार्या - केन्द्रीय विद्यालय ऋषिकेश

हिंदी – विभाग

श्रीमती रजनी त्रिवेदी (स्नातकोत्तर शिक्षिका)
श्रीमती ममता भट्ट (पशिक्षित स्नातक शिक्षिका)
श्रीमती संगीता चौधरी (पशिक्षित स्नातक शिक्षिका)
श्रीमती सुशीला थपलियाल (प्राथमिक शिक्षिका)

अंग्रेजी – विभाग

श्रीमती एफ़०एम० अंसारी (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका)
श्री सुनील दत्त (पशिक्षित स्नातक शिक्षक)
सुश्री साधना ध्यानी (प्राथमिक शिक्षिका)

संस्कृत – विभाग

श्री जानकीरमण झा (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक)

कला विभाग

श्रीमती अलका (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका)

मुख्य संपादक

श्री जानकीरमण झा (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत)

टाइपोग्राफी, डिजाइनिंग व छायांकन

श्री प्रतीक गुप्ता (कंप्यूटर प्रशिक्षक)

विद्यार्थी संपादक

विकास कश्यप (XI B)
अमन शर्मा (XI B)
गौरव नौटियाल (XI B)
रुक्सार निशा (XI B)

VIDYALAYA ANNUAL REPORT (2018-19)

The annual report showcases the achievements and glories of our school, undoubtedly but also makes us think deeply about our shortcomings. Kendriya Vidyalaya Rishikesh has always been very committed to create a healthy environment in our school which helps the young minds to blossom and provide a platform for individual thinking and holistic development of the child personality.

Kendriya Vidyalaya Rishikesh, which was instituted in the year in 2003 has earned its reputation as one of the reputed educational institutes of the region.

Achieving excellence is at the heart of our endeavour as educators. Academic achievements reflect a demonstrated ability to perform the best of one's ability by developing one's intellectual potentials and skills with diligence.

The session 2018-19 commenced on a wonderful note when the result of C.B.S.E for class 10 and 12 was declared. The year 2018 continued to bring euphoric news for us as the class 12 result was 97.44 percent in which 5 students got above 90 percent and similarly in class 10 the pass % was 91.57 and three student got above 90%. What Is more commendable is that 4 girl students of class 10 came in top 150 girls of Dehradun region in class 10 and one student, Jyoti Chaudhary got 100 out of 100 in Hindi in class 12.

"All work and no play makes a jack dull boy". So various co-curricular activities were held throughout the session to develop a child physically, morally, socially and mentally to hone the skills in scholastic areas. Regular house activities were held in which the students participated and displayed their calibre like advertisement show, debate, speech, group song, story-telling, extempore etc. and more that 500 student won prizes for their outstanding performances. In primary section also many interesting activities and competitions were organised throughout the year like Collage making, Clay modelling, Rakhi making, English spallation and many more. 326 books were distributed as prizes to the winners. Apart from it, Grand parents' Day was also celebrated to develop a sense of respect and care to our elderly ones. Along with the competitions, days of national importance like Kargil

divas, National Unity Day, Vigilance Awareness Day, Communal Harmony Day, Flag Day etc. were celebrated with full zeal and vigour. I want to place on record the outstanding contribution made under Flag Day and Communal Harmony. A sum of rupees 17210 was collected. I extend my sincere thanks to the parent community who had contributed open heartedly.

Participation in the Science, Maths, Green, and Cyber Olympiads itself is the biggest competition where a student competes to outshine other. It infuses a healthy competitive spirit through reward based assessment. In Green Olympiad, a total of 20 participants were registered. Similarly, in Technotholon a total of 30 teams were registered. In National Children Science Congress, Aditi from senior group was selected as stand by for KVS Nationals. In JNMSEE Aditi Rawat got selected for presentation on Water Management amongst 46 schools of the region. In PRMO (pre regional mathematics Olympiad) 2018, Anshika Chamoli of class 10 qualified and was further selected in Regional Mathematics Olympiad.

“To be a great champion, you must believe you are the best. If you are not, keep trying”. This thinking is reflected in games and sports competitions. Games and sports inculcate the spirit of positive challenges and sportsmanship among the students and prepare them for the life ahead. Our students actively participated in different sports competitions and won accolades, medals certificates and trophies. In Regional Sports Meet, our Vidyalaya bagged silver medal in under - 17 boys football, 400 mt. relay race and 200 mt. race for girls. Similarly, we have got bronze medal in under 14 -boys football, high jump and discus throw. I am feeling much proud to announce that our one student was selected for Nationals in yoga and one in cricket.

To facilitate vibrant synergy of ideas through their environment children were taken beyond the confines of classrooms so as to provide them learning beyond books. Student was taken to Swamy Rama Himalayan University, Dehradun in the month of November 2018 for their extended learning.

Students of our school had also participated in Social Science Exhibition in which they got recognition in creative writing, drawing and painting, Sanskrit sholk, skit and group dance. In group dance, KV Rishikesh bagged 2 position. Our team of 55 students participated in youth parliament too.

Kendriya Vidyalaya Rishikesh is one of the leading Kendriya Vidyalayas in the field of Information & Communication Technology. ICT & Computer Science is being taught to more than 800 students of Vidyalaya form class III to XII. Kendriya Vidyalaya Rishikesh offers excellent computer education to its students to make them competent in all dimensions related to Information and Communication Technology. Vidyalaya has one Air-Conditioned Computer Lab having 20 computers, 07 e-Class rooms equipped with LED Projectors, Interactive Boards, Visualizers and Magic Studios. Vidyalaya has a High-Speed Wireless Broad Band Connections having 20 Mbps download speed. Vidyalaya has its own Website that is being updated every day. It reflects all information about Vidyalaya like student enrolment position, details of staff members, examination schedule, day-to-day activities etc. Vidyalaya also facilitates parents to track performance of their child online through Shaala Darpan Portal. Using Shaala Darpan portal, parents can view updates on their child's progress, class attendance, health record and achievements of their child. For Primary section, a new computer lab has been inaugurated on 16 April 2019 having capacity for 20 computers.

Our Vidyalaya also has a rich library. It is enriched with subscriptions for more no. of newspapers magazines, educational periodicals and acquisition of a large no of books in fiction in both Hindi and English.

The Vidyalaya library is adequate to serve the needs of our students. This session new 316 books have been added to the library. Now we have total no. of 4298 books. Many activities like book corner, book mark making quiz on books were organised by the library teacher to motivate the students to the world of books.

National Adolescence Education Programme has been implemented in the school co-curricular activities for students to enrich themselves with the life skill

management in their day to day activities. Throughout the year the programme is planned and different activities with a view to solve the adolescence problems are organised. Two teachers are involved in organizing and handling the adolescent problem.

Apart from all this a regular health check-up is ensured twice in a year. Last year we had doctors from AIIMS, Rishikesh who conducted health check-up of the students. Doctors from Seema DENTAL Hospital also conducted dental check-ups of the children and motivated the children for personal health and hygiene. Similarly, to make the students aware of cleanliness, Swachhata abhiyaan was launched by the Vidyalaya in which the students cleaned the nearby areas of the Vidyalaya.

In our Vidyalaya scouts and guides are actively participating in different activities. The purpose of scout and guides is to contribute to the development of young people in achieving their full physical, intellectual, social and spiritual as individual, as responsible citizens. In the last session 5 guides and 4 scouts participated in Rajya Puruskar Testing Camp. Eight guides and eight scouts appeared and qualified Tritiya Sopan testing camp. A contribution of ₹ 2,978 was made in October for Kerala tragedy.

Pride of Vidyalaya

Science Stream

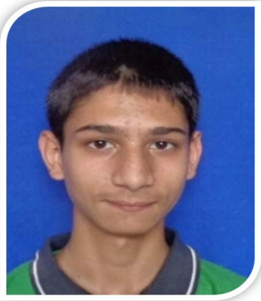

Shubham
94.00%

Prahlad Singh Aswal
92.60%

Humanities Stream

Rishika Chauhan
99.00%

Ragini Rana
94.00%

Class X

Anshika Chauhan
93.20%

Anishka Chamoli
90.40%

List of Toppers (2018—19)

Class XII — Science Stream			Class XII — Humanities Stream		
1.	SHUBHAM	94.00 %	1.	RISHIKA CHAUHAN	99.00 %
2.	PRAHLAD SINGH ASWAL	92.60 %	2.	RAGINI RANA	94.05 %
3.	KRISHNA SHANKAR SHARMA	86.80 %	3.	AVANTIKA BAGWARI	89.05 %

Class X		
1.	ANSHIKA CHAUHAN	93.20 %
2.	ANISHKA CHAMOLI	90.40 %
3.	ANAM NAZ	89.60 %

List of Subject Toppers (2018—19)

Subject Toppers Class XII			
1.	English	RISHIKA CHAUHAN	99 %
2.	Hindi	SHUBHAM	100 %
3.	Physics	SHUBHAM	95 %
4.	Chemistry	SHUBHAM, PRAHLAD SINGH ASWAL	95 %
5.	Mathematics	KIRAN	91 %
6.	Biology	SHUBHAM	95 %
7.	Computer Science	PRAHLAD SINGH ASWAL	97 %
8.	Economics	RISHIKA CHAUHAN	95 %
9.	History	RISHIKA CHAUHAN	99 %
10.	Geography	RISHIKA CHAUHAN	98 %
11.	Political Science	AVANTIKA BAGWARI	95 %
12.	Painting	PREETI	84 %

Subject Toppers Class X			
1.	English	ANISHKA CHAMOLI	95 %
2.	Hindi	ISHA	96 %
3.	Mathematics	VIVEK SINGH	96 %
4.	Science	VIVEK SINGH	95 %
5.	Social Science	SUHANI KALA	97 %

वार्षिकोत्सव

वृक्षारोपण

हिंदी विभाग

सरस्वती वंदना

हे हंस वाहिनी, ज्ञान दायिनी, वीणा वादिनी वर दे,
अपनी वीणा के तारों से जग को झंकृत कर दे।

हम हैं मूढ़ निरक्षर बालक, अक्षर ज्ञान हमें दो,
हम बालक हैं ज्ञान क्षुधित विद्या से क्षुधा मिटा दो।

माँ! हम बच्चे दिल के सच्चे तेरी शरण में आए हैं,
इस दिन हम विद्वान बनें, वर यही माँगने आए हैं।

ज्ञान-कोष तेरे पास असीमित, होता नहीं कभी वह रिक्त,
ऐसी विद्या वर्षा कर दो, जिससे हो जाएँ सब सिक्त।

मेधा रूप में मिल जाती हो, जो पूजा करता तेरी,
कृपा दृष्टि उस पर करती जो शरण में आ जाता तेरी।

हर विद्यालय मंदिर तेरा ज्ञान की ज्योति जले प्रतिदिन,
हम नन्हे मुन्ने बालक हैं करते शत्-शत् तुझे नमन।

रजनी त्रिवेदी
स्नातकोत्तर शिक्षिका, हिंदी

स्कूल के दिन

न जाने हम कब बड़े हो गए ?

स्कूल के दिन न जाने कहाँ खो गये ?

दोस्तों की बातें बहुत याद आयेंगी

आँखों में नमी सी छा जाएगी |

अध्यापक भी याद आएंगे

और बच्चों याद रखना १०वीं के अंक कहीं काम नहीं आएंगे |

राम सर का वो फिजिक्स पढ़ना;

और पीरियड ख़तम होते ही हमारा सो जाना,

केमिस्ट्री तो जैसे सिर के ऊपर से जाती थी |

यादव सर की डांट हमें बहुत रुलाती थी |

हम सारे दोस्तों का एक साथ स्कूल न जाना ,

और अगले सुधीर सर की प्यारी सी डांट खाना |

उसी डांट पर मन ही मन मुस्काना और

पहले पीरियड में टिफिन चाट जाना |

हम एक आउटपास में चार – चार वाशरूम जाया करते थे |

कविता मैडम के लेक्चर हमे बहुत भाया करते थे |

लंच के बाद हिंदी के पीरियड का आना

और हम सब में जोश भर जाना |

शुक्ल सर का वो कविता गुनगुनाना |

सर बहुत याद आएगा आपका मुस्कुराकर पाठ समझाना |

मालविका मैम का हमें बालों के लिए डांटना और

हमारा जन्म महीना का वो बहाना बनाना |

ये कविता पूरी हो जानी है

लेकिन बाद में टीचर्स की बहुत डांट खानी है

बस अब स्कूल के गिनती के चार दिन रह गए

ना जाने हम कब बड़े हो गए ?

स्कूल के दिन न जाने कहाँ खो गए ?

प्रियांशु सेमल्टी
ग्यारहवी 'अ'

बहुत जरुरी होती शिक्षा

बहुत जरूरी होती शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा ।
चाहे जितना पढ़ ले हम पर,
कभी न पूरी होती शिक्षा।
शिक्षा पाकर ही बनते हैं,
नेता, अफसर, शिक्षक।
वैज्ञानिक, मंत्री व्यापारी,
या साधारण रक्षक।
कर्तव्यों का बोध कराती,
अधिकारों का ज्ञान।
शिक्षा से ही मिल सकता है,
सर्वोपरी सम्मान।
बुद्धिहीन को बुद्धि देती,
अज्ञानी को ज्ञान।
शिक्षा से ही बन सकता है,
भारत देश महान।

नीतू कुमारी
आठवी 'ब'

एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छता की ओर हमारा ध्यान होना चाहिये,
बापू के सपनों का भी तो मान होना चाहिए,,

गलियों ,मुहल्लों ,सड़कों को क्यों भला दूषित करें,
हर आदमी की सोच में विज्ञान होना चाहिए,,

आकाश का जो रंग था, है आज क्यों धूमिल पड़ा?
हम आपको इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए

यत्र-तत्र फैली है गंदगी , स्वच्छ बताओ कौन करे .....?
गाँव-गाँव , घर-घर में भी अहवान होना चाहिए,,

कूड़े करकट को इधर उधर न फेंके हम कभी,,,
इसका सुरक्षित स्थान कूड़ेदान होना चाहिये ,,

स्वच्छ भारत को बनाना भी मेरा कर्तव्य है,
इसके प्रति हम सभी को निष्ठावान होना चाहिये,

जब हमसे ही है गंदगी तो साफ भी हम ही करें
इसमें लोक लज्जा ,शर्म न अपमान होना चाहिये,

स्वच्छता की सूची में एक भारत का भी होना चाहिये,
विश्व में हर जगह इसका गुणगान होना चाहिये,

स्वच्छता में साथ दोगे , आज तुम वादा करो
अब गंदगी से मुक्त हिंदुस्तान होना चाहिये

स्वच्छता की ओर हमारा ध्यान होना चाहिये
बापू के सपनों का भी तो सम्मान होना चाहिये

रुखसार
ग्यारहवी 'ब'

मित्र का चुनाव

हमारे जीवन में कुछ बहुत सारे कार्यों को करने के लिए हमें दोस्तों की सहायता, सलाह और साथ में होने की जरूरत होती है ताकि हम कार्यों को सफलता पूर्वक कर सकें | मित्र का साथ हमारे जीवन को पूर्ण करता है और हमारे जीवन को आनंद से भर देता है |

जीवन में विभिन्न प्रकार के मित्र मिलते हैं जो हमारे जीवन में अपना अलग प्रभाव डालते हैं| लेकिन हमे सिर्फ उन्हीं मित्रों को चुनना चाहिए जो हमारे जीवन में अच्छा प्रभाव डालें | इन मित्रों को चुनने के लिए हम निम्न प्रकार के कदम ले सकते हैं :-

- हमे उन मित्रों को चुनना चाहिए जो अच्छे स्वभाव के व विवेकवान हो |
- हमे उन मित्रों का चुनाव करना चाहिए जो किसी गलत कार्य में शामिल न हो व गलत कार्य न करता हो |
- मित्र का चुनाव करते समय यह बात ध्यान रखनी चाहिए की वह आपकी बात सुनता हो और आपको महत्त्व देता हो |
- सच्चा मित्र ईमानदार व खुली सोच वाला होना चाहिए |
- सच्चा मित्र आपको उत्साहित करता है व विपत्ति में आपका साथ देता है |
- मित्र का चुनाव करते वक्त अपने अन्दर से आने वाली आवाज़ को अवश्य सुनें ||

रजत चौहान

बारहवी 'ब'

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचारी , भ्रष्टाचारी
भ्रष्टाचार में मर गई दुनिया सारी

जहाँ देखो वहाँ भ्रष्टाचार
हर आदमी इससे होता है लाचार ,

आओ हम सब मिलकर कदम उठाएँ ,
भ्रष्टाचार को दूर भगाएँ |

दिन प्रतिदिन हमें यहाँ करना ,
गलत काम में कभी नहीं पड़ना |

जिसे करते देखो भ्रष्टाचार ,
उसे समझाओ बार –बार |

यह मत समझो कि हम नीचे दिख रहे है ,
नीचे तो भ्रष्टाचार करने वाले दिख रहे है |

दिन हो या रात ,
हमें रहना है सबके साथ,

इस साथ से हम भ्रष्टाचार को दूर भगाएंगे,
और अपने देश को समृद्ध बनाएँगे |

जब होगा हमारा देश भ्रष्टाचार से दूर
तब हो पाएगा हमारा देश मशहूर,

न देखो इधर-उधर,
बस अपने काम में रहो निडर,

मेरी इस कविता से यह समझ पाना ,
किसी से गलत कम नहीं करवाना,

हो समृद्ध ये
देश हमारा ,देश हमारा,

सब से प्यारा
हो समृद्ध ये देश हमारा
देश हमारा, सब से प्यारा |

आयुषी कप्रुवान
XI B

जल संरक्षण

जल ही जीवन है, यह एक महत्वपूर्ण बिंदु है | परन्तु क्या आप इसका मतलब समझते हैं , बिना जल के जीवन अधूरा है | हमें जल को बचाना चाहिये | जल से ही हमारा जीवन है , वर्षा के पानी को हमें इकट्ठा करना चाहिये तथा प्यूरीफाय कर फिर इस्तेमाल करना चाहिये | बहुत से देश है जहाँ पर लोग पानी की किल्लत से दम तोड़ रहे है, जीवन नष्ट होता जा रहा है | हमें पानी का उपयोग कम करना चाहिए ताकि जिन लोगों के पास नहीं है उनके पास पानी पहुँच जाए |

जल संरक्षण के कुछ महत्वपूर्ण उपाय

1. वर्षा के पानी को इकट्ठा करके उसका पुन: इस्तेमाल करना |
2. बाल्टी के पानी से नहाना चाहिये | फव्वारा का इस्तेमाल न करें |
3. अपने बाइक तथा वाहनों को पाइप से न धोएँ |
4. बेवजह पानी के नल को खुला नहीं छोड़ना चाहिये |
5. जितने पानी की आवश्यकता है उतना ही पानी इस्तेमाल करें |

वसुधा

ग्यारहवी 'ब'

नवजात कन्याओं का संरक्षण

मैं नारी हूँ, सुख –दुःख की भागी हूँ ,

जीवन पथ पर बढ़ती अभिमानिनी हूँ |

धरा पर जीवन अनमोल है,

मेरा इस पर अहम रोल है |

मैंने ही भारत को भगत सिंह दिया ,

मैंने ही कबीर ,नानक को जन्म दिया |

समय का कल मैं ही थी ,

आज भी मैंने संकल्प लिया |

रंग भरने का उत्साह जीवन में,

आने वाले कल को मैंने ही दिया |

भगवान की बनाई कली हूँ मैं ,

स्वर्ग की बाहों में पली हूँ मैं |

तेरी बेटी बनकर मिलने आई हूँ तुझसे ,

तू ही साँस छीनना चाहती है मुझसे |

अभी पूरी तरह मुझमें साँस आने तो दो ,

माँ मुझे इस दुनिया में आने तो दो ||

अंजिली भट्ट

बारहवी 'अ'

वीर जवान

जय हो फ़ौजी वीर जवान
हिन्दुस्तान की तुम हो शान |
देश की माटी की खातिर
कर देते न्योछावर प्राण |
जय हो फ़ौजी वीर जवान,
तुम हो पूरे देश की आन |
प्रचंड गर्मी रेगिस्तान की ,
या हो बर्फीला तूफ़ान ,
गहराई हो समुद्र की ,
या अंतरिक्ष के उड़ान ,
ऐसी विकट परिस्थितियों में भी ,
डिगा नहीं है तेरा ध्यान |
जय हो फ़ौजी वीर जवान ,
हिन्दुस्तान की तुम हो शान |

सोनाली नेगी
दसवी 'अ'

रोचक तथ्य

1. ५२००० टन सोना अभी भी जमीन के भीतर है, जिसकी कीमत २ ट्रिलियन डॉलर है |
2. हमारे शरीर का कंकाली ढाँचा ३५ साल की उम्र तक बढ़ता रहता है |
3. नाश्ते मे चॉकलेट केक खाने से आपका वज़न बहुत जल्दी कम होता है |
4. भारत मे हर साल अमेरिका से दो गुने इंजिनीयर बनते हैं |
5. कोका कोला का इस्तेमाल टॉयलेट धोने मे भी किया जा सकता है |
6. दिन मे एक बार चांदी के ग्लास से पानी जरुर पियें, इससे गुस्सा कम आता है |
7. एक दिन में एक इंसान के लिए २५ ग्राम चीनी काफी होती है |
8. लोग हर १० मिनट मे ९२ बार झूठ बोलते हैं |
9. पैदल चलते समय लगभग १० % समय हमारी आँखें बंद रहती हैं |

भविकान्त
बारहवी 'अ'

पहेलियाँ

प्रश्न १ – दोनों जब उठ जाते तो , बन जाते सारे काम , ताकत इनमे बढ़ी है , बतादो इनका नाम ?

उत्तर – हाथ

प्रश्न २ – जुबां नहीं पर करती बातें ,बंद करो तो लगती रातें ?

उत्तर – आँखें

प्रश्न ३ – हवा के अन्दर रहता हूँ , जीवन सबका मेरे हाथ , पढ़ने से भी मिल जाता हूँ , सबसे ऊपर मेरी बात ?

उत्तर – ऑक्सीजन

प्रश्न ४ – अक्षर तीन का है ये नाम , एक देश का मैं हूँ नाम , पहला कटे तो रत हो जाऊं , अंत कटे तो वज़न बताऊं ?

उत्तर – भारत

प्रश्न ५ – घर वो नहीं बनाती है , मीठे गीत वो गाती है , रंग है उसका पूरा काला , कौए को नहीं सुहाती है ?

उत्तर – कोयल

प्रश्न ६ – वो क्या है जो आपके सोते ही नीचे गिर जाती है और आपके उठते ही वो भी उठ जाती है ?

उत्तर – आपकी पलकें

सानिया रावत
छठी 'ब'

क्या आप जानते हैं?

- धरती पर इंसान ही अकेला ऐसा जीव है जो सीधी रेखा खींच सकता है |
- पूरे जीवन में हम अपनी उँगलियों को लगभग ढाई करोड़ बार मोड़ते है |
- जीभ हमारे शरीर के सबसे मजबूत मांसपेशी होती है |
- सिर्फ पैरऔर कलाई में हमारे शरीर की आधी हड्डियाँ होती हैं |
- आपके फेफड़े की सतह का छेत्रफल एक टेनिस कोर्ट जितना होता है |
- हमारी नाक पचास हजार तरह की खुशबू सूंघ सकती है |
- खुद को गुदगुदी करना नामुमकिन है |
- हमारी मांसपेशियों की ताकत दिमाग द्वारा सीमित होती है नहीं तो ये एक कार को भी उठा सकती है |

साहिल प्रसाद
बारहवीं 'अ'

सुविचार

- मेहनत एक ऐसी सुनहरी चाबी है जो बंद भाग्य के दरवाजे भी खोल देती है |
- फूल कभी दो बार नहीं खिलते | जन्म कभी दो बार नहीं मिलते और जीवन में हज़ारों गलतियां माफ़ करने वाले माँ - बाप नहीं मिलते |
- केवल प्रसन्नता ही एक मात्र ऐसा इत्र है जो दूसरों पर छिड़के तो उसकी कुछ खुशबू अवश्य ही आप पर चढ़ती है |
- जिंदगी में किसी से अपनी तुलना मत करो |जैसे चाँद और सूरज की तुलना किसी से नहीं की जा सकती क्योंकि यह अपने समय पर ही चमकते हैं |
- दुनिया में दो तरह के लोग होते है एक वो जो दुनिया के अनुसार खुद को

साक्षी नेगी
आठवी 'ब'

समय

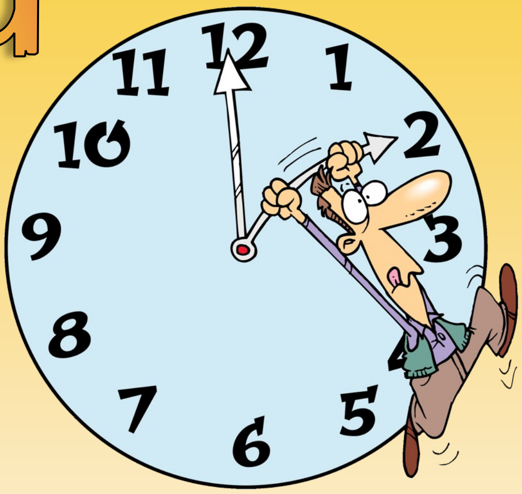

समय ना रुका है,
ना रुकता है,
हरदम हमेशा आगे बढ़ते जाता है ,
समय की धरा से जो टकराता है,
उन्नति के पथ पर सदैव वो आगे बढ़ता
जाता है |
जिन्दगी में जो समय का मोल
समझ जाता है ,
जीवन में कभी निराश नहीं होता है
समय को जो व्यर्थ गँवाता है ,
उन्नति से वो पीछे हटता जाता है |
जो समय को ठोकर मारता है,
वो जिंदगी को ठोकर मारता है,
उसे अभी नहीं पता समय का मोल,
बड़ा होकर वो पछताता है,

जो हरदम चलता है ,
समय के साथ,
जीवन में वो ख़ुशी मनाता है,
जो समय को आज नहीं समझता ,
आगे चलकर वो समझ जाता है |
समय को पीछे करना चाहता है ,
मगर कर नहीं पाता है |
जीवन में फिर वो हरदम ,
पछताता ही जाता है |

चिपको आन्दोलन

चिपको आन्दोलन एक पर्यावरण – रक्षा का अहम् आन्दोलन था | यह भारत के उत्तराखंड राज्य में ग्रामीण किसानो ने वृक्षों की कटाई का विरोध करने के लिए किया था | वे राज्य के वन विभाग के ठेकेदारों द्वारा वनों की कटाई का विरोध कर रहे थे | यह आन्दोलन तत्कालीन उत्तर प्रदेश के चमोली जिले में सन १९७३ में प्रारंभ हुआ | एक दशक के अन्दर यह पूरे उत्तराखंड छेत्र में फैल गया था | चिपको आन्दोलन की एक मुख्य बात है कि इसमें स्त्रियों ने भारी संख्या में भाग लिया था | इस आन्दोलन की शुरुआत १९७३ में भारत के प्रसिद्ध पर्यायवरणविद सुन्दरलाल बहुगुणा, कामरेड गोविन्द सिंह रावत , चंडीप्रसाद भट्ट तथा श्रीमती गौरा देवी के नेतृत्व में हुआ था | चिपको आन्दोलन वनों का अव्यवहारिक कटान रोकने और वनों पर आश्रित लोगों के वनाधिकारों की रक्षा का आन्दोलन था | रैणी में २४०० से अधिक पेड़ो को काटा जाना था, पर गौरा देवी जी के नेतृत्व में रैणी गाँव में २७ माहिलाओं ने प्राणों की बाजी लगाकर इसे असफल कर दिया था | इसी प्रकार हमें पेड़ो का कटान न करके अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखना चाहिए |

स्वाति रावत

आठवी 'ब'

महिलाओं का सम्मान क्यों जरुरी?

मनुष्य जीवन का एक कल्पनाशील विवेकवान प्राणी है । सपने देखना कल्पनाएं करना उसका स्वभाव है । मानव जाति में महिलाओं का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है | पुराणों में कहा गया है कि महिलाएं देवी का रूप हैं परन्तु कुछ लोग इस बात को समझना नहीं चाहते | वह स्त्री के महत्व को नहीं जानते । स्त्रियों को कई सारे रूप दिए जाते हैं , जैसे नारी शक्ति,देवी आदि | कहने के लिए तो वह एक नारी शक्ति का रूप है पर इस पर अमल कर पाना सभी लोगों के बस की बात नहीं है । यह कलियुग है और नारी एक बहुत बड़ी शक्ति बन चुकी है| हमें महिलाओं की रक्षा के लिए बहुत सारी शिक्षाएं दी जा रही हैं। क्या हम इस बात से सहमत हैं कि नारी के साथ अन्याय नहीं होता ? नहीं मैं तो इस बात से सहमत नहीं हूँ। आज भी नारी या महिलाओं के साथ अत्याचार होता है| हमें महिलाओं का सम्मान करना चाहिए | आखिर वही तो आज का भविष्य है| जो काम एक पुरुष कर सकते हैं वही काम महिलाएं भी करके दिखा सकती हैं। महिलाओं को लक्ष्मी का रूप माना जाता है, क्योंकि वह ही घर को चलाती है और उसी के घर शिक्षित हो पाता है। क्या महिलाओं का कार्य केवल बच्चों को पालना पोसना ही होता है? हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि नारी से देश है नारी का सम्मान जरूरी है ।

नारी से ही जग है
नारी से ही कल है
नारी हमारा भविष्य है

नारी के बिना हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते।

रेनुका पोखरियाल
XII 'A'

इन्टरनेट ऑफ़ थिंग्स

(IoT)

IoT कंप्यूटर विज्ञान के अंतर्गत एक नवीनतम टेक्नोलॉजी है जो भौतिक वस्तुओं को इंटरनेट द्वारा जोड़ने व उनके मध्य संपर्क स्थापित करने का कार्य करती है। इंटरनेट ऑफ थिंग्स दो शब्दों से मिलकर बना है। इंटरनेट से तात्पर्य है वह जाल जो दो या दो से अधिक उपकरणों को एक नेटवर्क से जोड़ता है और थिंग्स का अर्थ है भौतिक वस्तुएँ। अर्थात इंटरनेट ऑफ थिंग्स से तात्पर्य है कि "हमारे आस पास उपलब्ध भौतिक वस्तुओं (Light, Fans, AC, Refrigerator, Washing machine, Geyser, CCTV cameras, Car etc.) को इंटरनेट के माध्यम से इस प्रकार जोड़ दिया जाए कि वे एक दूसरे से संवाद (Communicate) कर सके"।

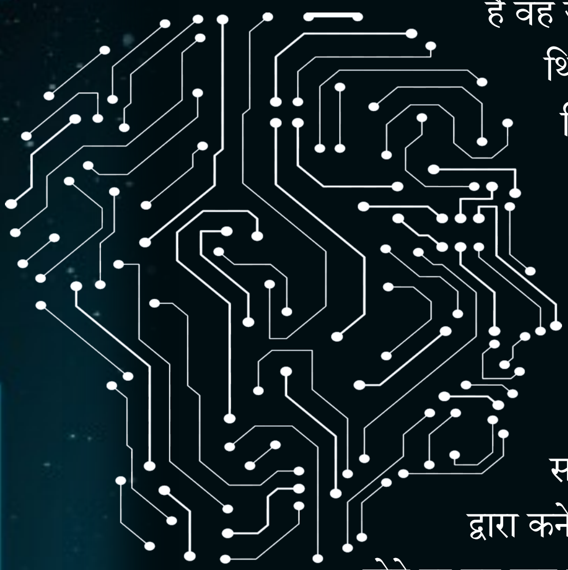

IoT की सहायता से घर मे उपलब्ध सभी उपकरण आपस में वार्तालाप करने में सक्षम होंगे व स्वसंचालित रूप से (Automatically) कार्य कर सकेंगे। उदाहरण के तौर पर यदि आपके घर में फ्रिज है और उसे इंटरनेट के द्वारा कनेक्टेड कर दिया जाए तो वह अपने अंदर सब्जी/किसी अन्य चीज की कमी होने पर वह खुद ही सब्जी का आर्डर कर देगा। इसके अलावा मान लीजिए कि आप अपने ऑफ़िस से कार में बैठ कर घर के लिए रवाना हो रहे है और आप चाहते हैं की घर पर पहुंचते ही आपको AC, Cooler, Fan, Lights On मिले तो इसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स के माध्यम से On/Off किया जा सकता है। क्योंकि आपकी कार का सेंसर आपके घर पर लगे उपकरण से जुड़ा होगा और वह आपके कार में बैठने पर घर पर लगे उपकरणों को सिगनल देगा कि अपने घर के लिए रवाना हो चुके हैं और कमांड के तौर पर आपके घर के उपकरण घर पहुंचने से पहले ही on हो जाएंगे। इसके अतिरिक्त आप अपने मोबाइल फोन से घर के वाई-फाई राऊटर द्वारा घर में लगे बिजली के उपकरण जैसे बल्ब, एयर कंडीशनर, गीज़र, गृह सुरक्षा प्रणाली और कैमरे अन्य घरेलू उपकरणों को नियंत्रित कर सकते हैं। एक उदाहरण के तौर पर मान लीजिए आप अपने परिवार के साथ छुट्टियां बनाने घर से बाहर निकलते हैं बाहर जाकर आपको याद आता है कि आप अपने घर में लगा AC/पंखा/बल्ब या कोई अन्य उपकरण गलती से ऑन छोड़ आए हैं तो आप अपने मोबाइल फोन से ही इन उपकरणों को ऑफ करने की कमांड दे सकते हैं।

एक अद्ययन के अनुसार भारत में इस समय लगभग 6 करोड़ IoT उपकरण संचालित हैं तथा सन 2020 तक इसकी संख्या बढ़कर लगभग 190 करोड़ होने का अनुमान है|

प्रतीक गुप्ता
कंप्यूटर प्रशिक्षक

विद्यालय में खेलों का महत्व

मनुष्य प्राचीन काल से ही कुछ न कुछ खेल खेलता आया है और उन खेलों को पारम्परिक खेलों का नाम दिया गया, धीरे-धीरे आम जनमानस की जीवन शैली में परिवर्तन आया और खेलों का स्वरूप बदलता गया । खेलों का जीवन में अहम महत्व है, इसे देखते हुए इस विषय को स्कूली शिक्षा में अहम रोल दिया गया एवं अध्यनरत बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक माना गया । खेलों के माध्यम से जहां नेतृत्व, सांस्कृतिक आदान-प्रदान , मेलजोल , प्रतिस्पर्धा, सहनशीलता , टीम भावना आदि गुणों का विकास होता है वहीं दूसरी और मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ धरोहर शरीर को स्वस्थ रखने में सहायता मिलती है । केंद्रीय विद्यालयों में खेलों को विशेष महत्व दिया जाता है, और यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिये की स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में केंद्रीय विद्यालय ही एकमात्र संस्थान है जहां खेलों के सफल आयोजन के साथ-साथ खिलाड़ियों के भोजन यात्रा और रहन- सहन की व्यवस्था पर उच्च स्तरीय व्यवस्थाओं का प्रबंध किया जाता है । यहाँ खेलों का आयोजन तीन चरणों में आयोजित किया जाता है, पहले चरण में संभाग में स्थित सभी विद्यालयों की टीमें संभागीय स्तर पर प्रतिभाग करती है उसके बाद चयनित टीम राष्ट्रीय स्तर पर अपने-अपने संभागों से प्रतिनिधित्व करती है और अंत में केंद्रीय विद्यालय संगठन की टीम भारतीय स्कूली खेल संघ (SGFI) द्वारा आयोजित राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग करती है । इस प्रतियोगिता में देश के समस्त राज्य, केंद्र शासित प्रदेश , सी०बी०एस०सी स्कूल, नवोदय विद्यालय और अन्य संस्थान भाग लेते है। यही एक मात्र प्रतियोगिता है जहाँ से भारतीय स्कूली टीम का चयन होता है जो अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में अन्य राष्ट्रों के साथ भाग लेती है ।

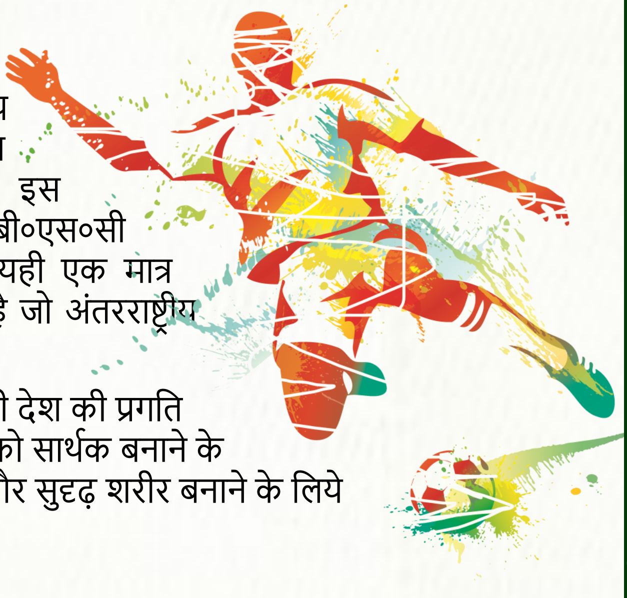

शारीरिक क्षमता और खेलों का राष्ट्र से सीधा संबंध है, किसी भी देश की प्रगति उसके नागरिकों की कार्य क्षमता पर निर्भर करती है और इसको सार्थक बनाने के लिये केंद्रीय विद्यालयों में खेलों के माध्यम से स्वस्थ मस्तिष्क और सुदृढ़ शरीर बनाने के लिये विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है ।

केंद्रीय विद्यालय ऋषिकेश में खेलों पर विशेष ध्यान दिया जाता है और इसी का परिणाम है की गत वर्ष संभागीय स्तरीय एथलेटिक की विभिन्न स्पर्धाओं में विद्यालय के बालक-बालिकाओं ने 02 स्वर्ण, 01 रजत और 09 कांस्य पदक प्राप्त किए, विद्यालय के गणेश ने जहाँ 400 मीटर में स्वर्ण पदक प्राप्त किया वही जूडो में वाशु कुलाश्री ने स्वर्ण पदक प्राप्त कर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में खेलने का सौभाग्य प्राप्त किया।

केंद्रीय विद्यालय ऋषिकेश में स्वस्थ बच्चे स्वस्थ भारत (SBSB) अभियान के माध्यम से बच्चों और अभिभावकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का जनजागरण किया गया, खेल दिवस पर प्राथमिक विभाग की खेल स्पर्धाओं का आयोजन कर हॉकी के महान खिलाड़ी स्व० मेजर ध्यान चंद को राष्ट्रीय खेल दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित किए गये। अंतर संदन मुकाबलों का आयोजन और वार्षिक खेल दिवस के माध्यम से खिलाड़ियों एवं छात्र—छात्राओं को निखारने का प्रयास विद्यालय में सकारात्मक खेल वातावरण बनाने में सार्थक सिद्ध हुआ।

"सर्वप्रथम हमारे युवाओं को शक्तिवान होना आवश्यक है। धर्म इसके बाद आता है। मेरे युवा मित्रों! आपको मेरी सलाह है कि शक्तिवान बनों।

गीता के अध्ययन की अपेक्षा फुटबॉल के जरिए आप ईश्वर के अधिक निकट होंगे। मैं आपसे स्नेह करता हूँ इसलिए यह बात मैं साहसपूर्वक कह रहा हूँ।

मैं जानता हूँ कि समस्या की जड़ कहाँ है। मैंने थोड़ा अनुभव अर्जित किया है। अपनी मजबूत मांसपेशियों एवं बलिष्ठ भुजाओं के साथ आप गीता को बेहतर समझ सकते हैं। आप जब तक खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप परमात्मा पर विश्वास नहीं कर सकते।"

स्वामी विवेकानन्द

डी० एम० लखेड़ा

शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षक

स्वरोव्स्की वाटर स्कूल

SWAROVSKI
WATERSCHOOL

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

English Section

Interesting facts about India

- Over 5000 years ago Indians established Harappan culture in Indus valley civilization .
- The name Indians derived from the river Indus, the valleys around which were the home of the early settlers .
- The Aryans worshipers referred to the river Indus as Sindhu.
- The Persian invaders converted it into Hindu. The name Hindustan combines Sindhu and Hindu and Thus refers to the land of Hindus.
- The four religions born in India Hinduism, Buddhism, Jainism, and Sikhism.
- Chess was invented in India.
- Algebra ,Trigonometry and calculus are studies, which originated in India.
- Ayurveda is the earliest school of medicine known to mankind. The father of medicine charkha, consolidated Ayurveda 25000 years Ago
- The world first university was established in Taxila in 700 BCE. More than 10500 students from all over the world studies more than 60 subjects.
- Martial arts were first created in India and later on spread to Asia by Buddhist missionaries .
- Yoga has its origin in India and has existed for over 5000 years.
- India has the largest democracy in the world.
- India is the second largest producer in the world of staple crops like: Wheat and Rice .
- The largest employer in India is the Indian Railways, employing over million people.
- India exports software to 90 countries.

Alka Tariyal
PGT (History)

Antoine-Laurent Lavoisier

Antoine-Laurent Lavoisier was born into a privileged family on August 26, 1743 in France's capital city, Paris. His father was Jean-Antoine Lavoisier, a lawyer in the Paris Parliament. His mother was Émilie Punctis, whose family wealth had come from a butchery business. She died when Antoine was five years old, leaving him a large amount of money.

Between the ages of 11 and 18, Antoine was educated at Collège des Quatre-Nations, a college of the University of Paris. He studied general subjects there, including the sciences in his final two years. Although he was very attracted to the sciences, he enrolled in the college's law school at age 18, aiming to pursue the same career as his father. (His father had encouraged him to believe that science was merely a hobby, not a serious profession.) After two years studying law, Antoine Lavoisier was awarded a bachelor's degree. A year later, in 1764, he obtained a license to practice as a lawyer, but decided against this.

While studying for his law degree Lavoisier maintained his interest in science, attending science lectures in addition to law lectures. In 1764, the year he obtained his license to practice law, he also published his first scientific paper. In the same year he read a paper to the elite French Academy of Sciences. He was elected to the French Academy of Sciences in 1769, aged just 26.

In 1772 Lavoisier and other chemists bought a diamond and placed it in a closed glass jar. They used a remarkable giant magnifying glass to focus the sun's rays on the diamond. The diamond burned and disappeared.

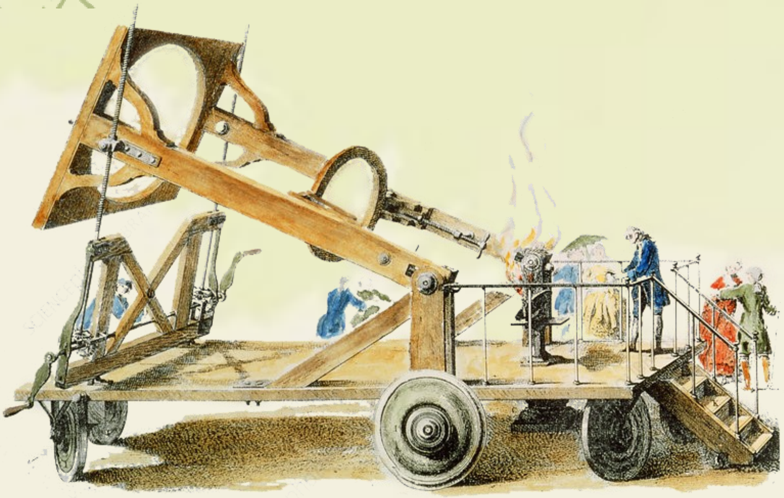

Lavoisier's remarkable combustion apparatus

Lavoisier noted the overall weight of the jar was unchanged, even though all of the diamond had disappeared. This observation would later be part of the evidence convincing him that his law of mass conservation was correct.

Whether diamond or charcoal were burned by the giant lens, the same gas was produced – we now call it carbon dioxide. Lavoisier realized that diamond and charcoal are different forms of the same element. He gave this element the name carbon.

Oxygen and Combustion

In 1772 people did not understand the process of burning. They had inconsistent and confused theories, chief of which was the theory of *phlogiston*, an undetectable substance which sometimes had negative mass! We now know that combustion happens when substances react with oxygen at high temperatures. In 1772, however, when Lavoisier began working in this field, oxygen's discovery by Joseph Priestley still lay two years in the future.

Lavoisier's work enjoyed a great advantage over many other scientists, namely his great passion for making accurate measurements. He pursued quantitative rather than qualitative science.

In 1772 Lavoisier discovered that when phosphorus or sulfur are burned in air the products are acidic. The products also weigh more than the original phosphorus or sulfur, suggesting the elements combine with something in the air to produce acids. But what?

In 1774 Joseph Priestley visited Paris. He told Lavoisier about the gas produced when he decomposed the compound we now called mercury oxide. This gas supported combustion much more powerfully than normal air. Priestley believed the gas was a particularly pure version of air. He started calling it dephlogisticated air, believing its unusual properties were caused by the absence of phlogiston.

Lavoisier did not believe it was dephlogisticated anything, because he did not believe in phlogiston.

In 1779 Lavoisier coined the name *oxygen* for the element released by mercury oxide. He found oxygen made up 20 percent of air and was vital for combustion and respiration. He also concluded that when phosphorus or sulfur are burned in air, the products are formed by the reaction of these elements with oxygen.

Mratyunjayam Yadav
PGT Chemistry

SOME SAFETY AND SECURITY TIPS FOR COMPUTER AND INTERNET USERS

- Never leave an email account unattended if it is logged in, unless a password protected screen saver is invoked.
- Turn off your computer when not using it. Turning off the computer gives you safety from the security attacks. Use the 'Turn off Monitor' to conserve or save energy.
- Disconnect your computer from the Internet when you are not using it. Adware and spyware are computer programs which harm the web browser security. They automatically play, display and download advertisements to your computer when it is connected to the internet.
- Update your antivirus with the latest available updates. These updates can be done by selecting the option automatic updates.
- Take care of shoulder surfing. Shoulder surfing is a direct observation technique such as looking over someone's shoulder to get their passwords, PINs, and other sensitive information. Someone may even listen in to conversation while you give out your credit card number over the phone. So, you should never reveal your password in front of others because there may be chance of shoulder surfing.
- Delete or truncate sensitive data elements when they are not in use to avoid the risk of hacking.
- Always maintain a backup of your critical data to restore to the original state in case something happens to your system.
- Download software only from a trusted website and never download software through email attachment as most organizations do not send them via email attachment.

Anshvi Yadav
PGT (Computer Science)

Geoffery Chaucer

The father of English Poetry

Geoffrey Chaucer was born in London between 1340 and 1345; there are no exact birth records. His name was of French origin and meant shoemaker. Chaucer was the son of a prosperous wine merchant and deputy to the king's butler, and his wife Agnes. Little is known of his early education, but his works show that he could read French, Latin, and Italian. There exist no memoirs of Chaucer, but Canterbury Tales perhaps gives a sight of the writer: Chaucer was neither poor nor was he a member of the landed gentry. Chaucer grew up familiar with noble folk though he was not one, and he was well educated in book learning and in aristocratic values and manners. He worked as a page for Elizabeth de Burgh, Countess of Ulster ad daughter-in-law of the King of England around 1357. He continued working for the royal house and was made an esquire of the King in 1368. He married one of the ladies in waiting of the Queen, Philippa Roet around 1374. They had two sons, Thomas and Lewis. In 1359, he served on the Continent in one of the many campaigns of the Hundred Years War.

The outstanding English Poet before Shakespeare and "The First finder of English language". His *"The Canterbury Tales"* ranks as one of the greatest poetic work in English. He was trusted and aided by three successive kings Edward III, Richard II, and Henery IV.

He died October 25, 1400, London. Was the first to be buried in west minister Abbey's poetic corner.

Sunita Joshi
PGT (English)

Two Sides of Life

Happiness and sadness come,
Back to back in our sensation.
Meeting and separation is Life's definition
To be born and to be dead is God's creation,
But we have to go to a perfect destination.
Life is a chewing gum
We have to chew it,
But when some people are
in pressure, they throw it.
Life is a gift of God,
We have to respect this gift.
Instead of going by the ladder
We can go by the lift.

Naveen Joshi
XI B

WHAT IS MATURITY?

Knowing myself.
Asking for help when I need it.
Admitting when I am wrong and making amends.
Accepting love from others.
even if I am having tough time loving myself.
Seeing that life is blessing.
Having an opinion without insisting that other share it.
Recognising my short coming and my strength.
Acknowledging that my needs are my responsibilities.
Caring for people without having to care of them.
Accepting that I will never be finished –
I will always be a work-in –progress

Yogita Rawat
XII A

FEAR

I have a fear of losing you

I have the fear how I live without you

I have fear that one day you will leave

I have the fear what I would do without you

You are my soul

I can't think my life without you

During childhood I had fear of falling down

But now I have fear of going far away from you

But my fear increases day by day if you leave on a day

I know it's nature's choice

Everyone has to leave one day

But I have fear of losing you

I have a fear how I will live without you MOM.

I LOVE TO BE IN YOUR COMPANY

BUT HAVE FEAR OF LOSING YOU.

Simran Bisht
XI 'A'

STOP !

Stop........
Stop rushing after wealth
stop behaving like creatures
as you have special features
we are climbing the stairs of success
but stop and think why we start
stop thinking for mortal things
it causes rush only
start thinking for your immortal moments
which bring happiness to you long live
after your death no one is going to ask
how much you earned
what matters is your good deeds on earth

Aditi Rawat
XII A

GOOD MEMORiES
are unforgettable memories

Life is full of various events and experiences. But all of these are not equally important, enjoyable and memorable. All days we come across in our life are not the same. Some are memorable. Memorable Day is the funniest and happiest of our life. Sometimes, it is unforgettable because of the joy and fun that has given to us.

Good memories include may be the happiest day, surprising day and other something special days. Some memories are unforgettable, remaining ever vivid and heartwarming in my opinion, everyone has a special memory that they will never forget.

So, make good memories as much as possible in the future, which are unforgettable for the life

Pratishtha Rawat
XI 'B'

FUNNY FULL FORMS

NEWSPAPER
North East West South Past And Present Event Record

STUPID
Smart Talented and Unique Person In Demand

DATE
Day And Time Evolution

PEN
Power Enriched IN Nib

EAT
Energy And Taste

OK
Objection Killed

MAD
Master of All Discoveries

MAD
Master of All Discoveries

NO
Next Apportunity

ETC
End of Thinking level

Anjali
XI 'B'

Cantonment kid

"Dedicated to my dad and all the person working in defence"

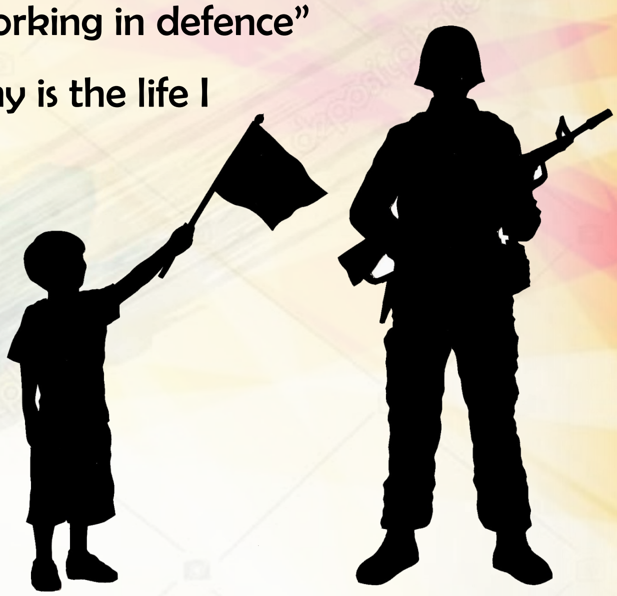

Born to dad in saffron white and green, army is the life I had only seen.

Discipline and honesty are just that we need finding the joys in small little things....

We let ourselves fly without wings chasing the dream as ambition of mine to grab them all and being on cloud mine. Truth and honesty are just the tools, love is what needed for the mind to be cool, voice needs to be strong and deep.

So as the criminal also weeps

To my dad, here is just a salute with a great sound rhythm along

Deepika Pokhriyal
XII A

God Gives

When I asked God for strength, he gave me difficult situation to fight.

When I asked God for brain, he gave me puzzles in life to solve.

When I asked God for wealth, he showed me how to work hard.

When I asked God for peace, he showed me how to help other.

God gave me nothing I wanted, he gave me everything I needed

Muskan Singh
XII A

My Life
My Learning

The journey is quite long to be summarized in a piece of paper. I am going to share a small part of it. I, Shivani Juglan, started my journey in June 2012. I love my school days. During the initial days, I came and talked a little with school friends. Slowly and steadily I got to know it and after some years I became friends with many. It takes a tough time to establish yourself when someone is already there on the top. But **your hard work, talent and constant efforts make you achieve what you desire.** I came up, teachers started knowing me the very first year. I never got a friend as in real manner. Then I made myself, **you are the constant companion of yours.** As the time rolled by I started knowing people and their intentions. **The world is full of wizards but if your magic is powerful then no one can disguise you.** You are responsible for you. In the beginning of ninth, I was afraid of the twice retailer as I knew them how they wore. But when they came, we spent time together and I realized **every person is there either to teach you or to give your life moments to cherish**. Then I confronted with tenth, the board class, the most beautiful year of student's life. That year was a combo of study and fun but eleventh science was opposite. That was full of fun and joy. Got 93.4% unsatisfied result. Then came the crucial time where I have to choose my subjects. I went for PCMB. **To shine you have to be different and unique from others** .

Shivani Juglan

XII A

My School

My school, my school,
Beautiful and so cool.
    Our teachers are so nice,
    They give knowledge & advice.
My school looks so simple,
But to us it's a temple.
    In the morning we pray,
    Study there whole day.
When the life of school ends,
We have bunch of many friends.
    I will only be a fool,
    If I miss my school.
My school, my school
Beautiful & so cool
    I go with a bag
    with my School tag.
My school uniform
in winter keeps me warm
    My school, my school
    Beautiful & so cool

Kavindra Painuly
XII A

गणतंत्र दिवस समारोह

ANNUAL SPORTS DAY 2018

संस्कृत

विभाग

जीवः कथं भवेद् गोविन्दः?

जीवः कथं भवेद् गोविन्दः?
सोऽहं सोऽहं सदा ब्रुवन्तं,मिलति सारिका सदा हसन्तम्।
पृच्छति कथं भवेदानन्दः, जीवः कथं भवेद् गोविन्दः? ॥

शुकः सारिकां वदति सस्मितं, नैव पङ्कजं भवति विस्मितम्।
यद्यपि मलिने सलिले वासः,विलसति कमले सुखदो हासः॥

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, त्यज सर्वं मलिनं व्यवहारम्।
मनसि निर्मले परमानन्दः, जीवस्तदा भवेद् गोविन्दः॥

अनन्या
अष्टमी 'अ'

गुरु

गुरुवचः सूर्य-राशिमभिस्तमः
तिष्ठति न मतौ गुरुभक्तानाम्।
हे गुरो! कृपालो शिष्येषु
प्रणतेषु कृपां तव याचामः॥१॥
[गुरु-पद-कमलाभ्याम् नमो नमः]

जन्मना वयं पशवः सर्वे
कृपया ते मानवताम् प्राप्ताः।
भवतः कृपया कृतिनो भूत्वा
पद-युगले भवतः प्रणमामः ॥२॥
[गुरु-पद-कमलाभ्याम् नमो नमः]

त्वं माता पिता त्वमेव गुरुः
कुटिलानामस्माकं बन्धुः।
अपराधाः सर्वे क्षन्तव्याः
लज्जिता वयं त्वाम् याचामः॥३॥
[गुरु-पद-कमलाभ्याम् नमो नमः]

अज्ञानतिमिरहर ! ज्ञाननिधे !
धर्मस्य पथो दर्शितस्त्वया।
विचलाम न धर्म पथो हि क्षणं
आशिषम् त्वदीयं याचामः॥४॥
[गुरु-पद-कमलाभ्याम् नमो नमः]

निखिल नेगी
सप्तमी 'अ'

बूंद जो बन गई मोती

धरा हरित कलेवरा,नील-नीलम्बरं, नील-नीलम्बरम्।।
हरित तनु धरातले इदं सुनीलमम्बरम्।
उड्डीयते समीरणेन, यत्र मेघ-टालिका।
दिशः प्रपश्य वर्णिलाः, १ प्रफुल्लिताः समुज्ज्वलाः
सुमे सुमे च केन वा- २, कृतः शृंगारोऽयम्।
को नाम चित्रकारोऽयं, नु चित्रकारोऽयम्।
को नाम चित्रकारोऽयम्।।

तपस्विवत् सुनिश्चलाः महीभृतां शिखा इमाः।
इमानि घुर्ण-वेष्टनानि, सङ्कटानि सर्पवत्।
ध्वजा इवोत्थिता अमी-२, च देवदारु पादपाः।
इमे च पाटलास्तराः, इमा वसन्त-वाटिकाः।
कवेर्हि कस्य कल्पना-२, सुचमत्कारोऽयम्।
को नाम चित्रकारोऽयं, नु चित्रकारोऽयम्।
को नाम चित्रकारोऽयम्।।

प्रकृतेऽरियं पवित्रता, विलोक्यतां त्वया।
अवधारये स्वमानसे च तद्गुणावलीम्।
उज्ज्वालयाद्य लोहीतं-२ तेजः स्वभालगम्।
त्वां वीक्षते कणात् कणाद् विराड-रूपच्छविः।
एकं हि स्वस्य लोचनं -२, तस्य सहस्रकम्।
को नाम चित्रकारोऽयं, नु चित्रकारोऽयम्।
को नाम चित्रकारोऽयम्।।

साक्षी जुगलान
नवमी 'ब'

ईश्वरे विश्वासः भवेत् !!

एकः राजा आसीत् | सः अत्यन्तं दयालुः आसीत् | एकदा राजा पूजार्थं भगवतः शिवस्य मन्दिरं गतवान् | मन्दिरे तेन द्वौ भिक्षुकौ दृष्टौ | तौ भिक्षुकौ प्रतिदिनं मन्दिरे एव तिष्ठतः स्म | एकः भिक्षुकः मन्दिरस्य दक्षिणतः उपविशति अपरश्च मन्दिरस्य वामतः उपविशति स्म | यदा राजा भगवतः शिवस्य पूजां आरब्धवान् तदा तौ भिक्षुकौ अपि भगवतः प्रार्थनां आरब्धवन्तौ | एकः वदति हे भगवन्! भवान् राज्ञे बहूनि दत्तवान् मह्यम् अपि ददातु इति | अपरः राजानं वदति हे राजन्! भगवान् भवते बहूनि दत्तवान् अतः किञ्चित् मह्यमपि ददातु इति | भिक्षुकयोः एकः भगवतः याचते अपरः च राज्ञः याचते स्म | राजा किमपि अनुक्त्वा गृहं गतवान् | गृहं गत्वा राजा एकस्मिन् घटे क्षीरं पूरयित्वा तस्मिन् स्वर्णमुद्रां स्थापितवान् | तदनन्तरं मन्त्रिणम् आहूय मन्त्रिणे क्षीरेण पूर्णं घटं दत्त्वा उक्तवान् हे मन्त्रिन्! भवान् एतं घटं नित्या मन्दिरं गच्छतु , तत्र यः भिक्षुकः मन्दिरस्य वामतः उपविशति तस्मै दत्त्वा आगच्छतु इति! मन्त्री तदा मन्दिरं गत्वा दृष्टवान् तत्र भिक्षुकद्वयम् अस्ति! यः मन्दिरस्य वामतः आसीत् तस्मै क्षीरेण पूर्णं घटं दत्तवान्! सः भिक्षुकः राज्ञः क्षीरं प्राप्य आनन्देन पातुम् आरब्धवान् | यदा तस्य उदरं पूर्णम् अभवत् तदा अपराय भिक्षुकाय दत्तवान् उक्तवान् च- भगवान् न ददाति राजा एव ददाति | अहं राज्ञः याचितवान् आसम् अतः मह्यं दत्तवान् | नयतु किञ्चित् क्षीरम् अस्ति तत् पिबतु इति | सः अपि भिक्षुकः घटं स्वीकृत्य अवशिष्टं यत् क्षीरम् आसीत् तत् सर्वं पीतवान् | घटस्य अधः स्वर्णमुद्राम् आसीत् तदपि सः दृष्टवान् मौनेन च उत्थाय स्वगृहं गतवान् |

अनन्तरे दिने पुनः राजा मन्दिरं गत्वा दृष्टवान् तत्र एकः एव भिक्षुकः उपविशन् आसीत् | राजा तं पृष्टवान्- अपरः भिक्षुकः कुत्र इदानीम्? भिक्षुकः उक्तवान् राजन्! सः अद्य न आगतवान्! सः तु मूर्खः एव यत् सः भगवतः किमपि याचते स्म यतोहि भगवान् कथं दास्यति इति | अहं क्षीरं पीत्वा अवशिष्टं क्षीरं यद् आसीत् तत् तस्मै दत्तवान् आसम् इति |
तस्य वचनं श्रुत्वा राजा मृदुः हसित्वा उक्तवान्- आम् सत्यम्, तस्मै भिक्षुकाय तु भगवान् एव दत्तवान् इति!!

आयुष कुमार
अष्टमी 'अ'

एहि हसामः

रे विशाल! त्वं किमर्थं धावसि?
विशालः- अरे दिलीप! मा पृच्छः भोः! भयेन धावाम्यहम् !
दिलीपः- कस्मात् भयम्? किमर्थं वा भयम्?
विशालः- मम प्रेमिका मां पृष्टवती - त्वं मयि कियत् स्निह्यसि इति!
अहम् उक्तवान् आसम्- हृदयं छित्वा पश्य तव हि नाम भवेः! (दिल चिर के देख तेरा ही नाम होगा)
इदानीं सा छुरिकां गृहीत्वा मम पृष्ठतः आगच्छति मम हृदयं छेत्तुम्!
मां रक्ष भोः इदानीम्॥

पुत्रः- अम्ब ! अहम् इदानीं जलाशये स्नानार्थं गच्छामि।
माता- मास्तु । तत्र हिंस्रजलजीविनः सन्ति, सः गम्भीरः जलाशयः अपि।
पुत्रः- पिता तु सर्वदा गच्छति एव संतरणार्थं तत्र। अहं किमर्थं न ?
माता- (कोपेन) तस्य जीवन-वीमा (Life Insurance) अस्ति इत्यतः।
-- नारदः।

पप्पू- अहं यस्मिन् गृहे कार्यं करोमि तस्य गृहस्य गृहस्वामी मां गर्दभः इति सम्बोधयति मध्ये मध्ये मां ताडयति अपि!
विशालः- एवं तर्हि तस्य गृहस्य कार्यं त्यक्त्वा आगच्छतु!
पप्पू- न भोः! केवलम् एकाम् आशां नीत्वा तिष्ठन् अस्मि भोः!
विशालः- का सा आशा?
पप्पू- तस्य गृहस्वामिनः एका सुन्दरी पुत्री अस्ति!
यदा सा पठितुं न शक्नोति तदा गर्दभेण सह तव विवाहं कारयिष्यामि इति गृहस्वामी वदति!
सा एव मम आशा अस्ति!
विशालः- अहो एवं वा! तर्हि तत्रैव तिष्ठतु भवान्

स्वाति रावत
अष्टमी 'ब'

पाठशालां गच्छामि

पाठशालां गच्छामि ।
आचार्यानहं प्रणमामि ।
मित्रैः साकं बर्गं गत्वा
अक्षरमालां कथयामि ।

अरुणः वदति अ आ इ ई।
उदयः भरणति उ ऊ ऋ ऋ ल।
एला कथयति ए ऐ ओ औ
अहमपि वदामि अं अः ।
कृष्णः कथयति क ख ग घ ङ।
चैत्रा बदति च छ ज झ ञ।
टामः ब्रवीति ट ठ ड ढ ण।
तारा भणति त थ द ध न।
पवनः पठति प फ ब भ म।

शङ्कर आहे श ष स ह।
इत्यं सर्वे बदाम बर्णान्

प्रिया सिंह
अष्टमी 'ब'

बुद्धिमती राजकुमारी

कश्चन राजकुमारः आसीत् पूर्वम्। तं पतित्वेन प्राप्तुं बह्व्यः राजकुमार्यः समुत्सुकाः। सः स्वस्य विषये अवदत्- "अहम् अन्यावलम्बनं विना अग्रे न गच्छामि। अन्यबोधनं विना कस्यापि निर्णये न समर्थः। महान्तं भारं वहामि सदा। मम जीवनं मेघजीवनमिव अस्थिरम्" इति। बह्व्यः राजकुमार्यः एतद् श्रुत्वा तस्य परिणये अनास्थां दर्शितवत्यः। एका राजकुमारी अस्य आशयं यथार्थतया अवगतवती। राजकुमारस्य आशयः तु- 'धर्मम् अवलम्ब्य गच्छामि। मन्त्रिभिः समालोच्य निर्णयं करोमि। राज्यनिर्वहणभारं वहामि। मेघः इव परेषाम् उपकारं करोमि' इति। एतम् अवगत्य सा राजकुमारी पितरम् उक्तवती – 'अहं तं वृणोमि। यतः तस्य अन्या भार्या अस्ति एतावता एव' इति। सः राजलक्ष्मीं वृतवान् अस्ति। अतः तं पतित्वेन प्राप्तुं अहं सज्जा इति तस्याः कथनस्य आशयः। बुद्धिमतः राजकुमारस्य अनुरूपा ननु सा। अतः तयोः विवाहः अचिरात् एव प्रवृत्तः।

शीतल नेगी

सप्तमी 'अ'

कथा

चरित्रनिर्माणे शैक्षणिकदृष्ट्या सृष्टिकालतः एव कथा-दृष्टान्तानां प्रमुखं स्थानम्। संस्कृतवाङ्मयम् एभिः कथा-दृष्टान्तैः परिपूर्णं वर्तते। विश्वस्य अन्यासु अपि भाषासु इमे कथा-दृष्टान्ताः प्रचुरमात्रायाम् उपलभ्यन्ते। बुद्धिमन्तः जनाः स्वीयं कथ्यं द्रढयितुं प्रमाणयितुं च स्थाने स्थाने एतेषाम् उपयोगं कुर्वन्ति। एतेषां कथा-दृष्टान्ताना आबालवृद्धस्त्री-पुरुषेषु विशेषतः बालकबालिकासु सद्यः वाञ्छितः प्रभावः निपतति। सहृदयानाम् अनिर्वचनीयानाम् एतेषाम् अभावे जीवनं सर्वथा नीरसम् एव भवेत्।

यत्र इमे मनः आह्लादयन्ति तत्र हृदयम् अपि परिवर्तयन्ति। यत् कार्यम् अन्य-साधनैः सम्पादयितुम् असम्भवं भवति तद् अनायासेन एव एभिः कथा-दृष्टान्तैःसुसाध्यते। सचित्रा इमे यत्र नेत्र-प्रसादकाः भवन्ति, तत्र हृदयम् अपि आशु संस्पृशन्ति। संख्यायाम् असीमिताः एते सृष्टेः अन्य-पदार्थाः इव समये समये उत्पद्यन्ते विलीयन्ते च।

जिया

सप्तमी 'अ'

चतुरः शृगालः

एकः वनम् आसीत्। तत्र एकः सिंहः निवसति स्म। स बहुक्रूरः आसीत्। सिंहः प्रतिदिनम् एकं मृगं खादति स्म।

एकदा तत्र एकः शृगालः आगच्छत्। स अतीव चतुरः आसीत्। सः सिंहं पश्यति भीतः च भवति। सिंहः शृगालस्य समीपम् आगच्छति तं च खादितुं तत्परः भवति। तदा शृगालः रोदनं करोति।

सिंहः शृगालं पृच्छति- अरे! त्वं किमर्थं रोदिषि?

शृगालः वदति- श्रीमन्! वने एकः अन्यः सिंहः अस्ति। सः मम पुत्रान् खादितवान्। अतः अहं रोदनं करोमि।

सिंहः पुनः पृच्छति- सः अन्यः सिंहः कुत्र अस्ति।

शृगालः वदति- समीपे एव एकः कूपः अस्ति। सः तत्र निवासं करोति।

सिंहः वदति- चल मया साकं चल। अहं तत्र गत्वा पश्यामि तं सिंहं च मारयामि।

शृगालः वदति- श्रीमन्! आगच्छतु। अहं भवन्तं तत्र नयामि तं च सिंहं दर्शयामि।

शृगालः सिंहं कूपस्य समीपं नयति कूपं च दर्शयित्वा कथयति अस्मिन्नेव कूपे सः सिंहः निवसति।

सिंहः यदा कूपजले पश्यति तदा तत्र सः स्वप्रतिबिम्बं पश्यति। सः कोपेन गर्जनं करोति। तस्य गर्जनेन कूपादपि प्रतिध्वनिः भवति। सिहः चिन्तयति निश्चयेन अत्र अन्यः सिंहः निवसति। अतः कुपितः सः स्वप्रतिबिम्बम् अन्यं सिंहं मत्वा कूपे कूर्दनं करोति। सिंहः तत्रैव मृतः भवति।

एवं शृगालः स्वचातुर्येण आत्मरक्षणं करोति।

आस्था कुमारी

सप्तमी 'अ'

मूर्खः काकः

एकदा एकः काकः कुतश्चित् एकां रोटिकां प्राप्नोति। काकः मुखे रोटिकां धृत्वा वृक्षस्य एकस्यां शाखायाम् उपविशति। ततः तत्र एकः लोमशः समागच्छत्। लोमशः काकस्य मुखे रोटिकां दृष्ट्वा अचिन्तयत् यदि एषः काकः केनापि प्रकारेण मुखम् विवृन्तं करोति तदा अस्य रोटिका नीचैः पतिष्यति। अहं च रोटिकां खादिष्यामि।

सः लोमशः मुखम् उपरि कृत्वा वदति- हे काक! त्वं तु अतिसुन्दरः असि। तव स्वरः अपि अतीव मधुरः भवेत्।

काकः लोमशस्य मुखात् स्वप्रशंसां श्रुत्वा प्रसन्नः भवति।

लोमशः पुनः वदति- हे सुन्दर! काक! एकं गीतं श्रावयतु।

काकः यदा गानं गातुं मुखम् उद्घाटयति तदा तस्य मुखात् रोटिका अधः पतति।

लोमशः रोटिकां नीत्वा शीघ्रं ततः पलायनं करोति।

निखिल
सप्तमी 'अ'

रक्षाबन्धनपर्व

रक्षाबन्धनपर्व एतद्
रक्षाबन्धनपर्व ।
मानवधार्मिकमूल्यं भजतां
सर्वैश्वर्यसमृद्धिदमेतत्॥

सहोदर्यहृदं जागर्ति
सद्भावनया उल्लसति ।
श्रावणमासे पूर्णिमादिने
पर्वाचरणं सर्वत्र ॥

अस्मद्देशे तथा विदेशे
कुर्वन्ति जनाः सानन्दम् ।
भ्रातृभगिन्योः स्नेहभावः
दृढतां गच्छति पर्वणा ॥

रक्षाबन्धनरूपा रक्षा
भगिनीभिः क्रियतेऽत्र सादरम् ।
भ्रातरोऽपि बहुधादरपूर्वं
मानयन्ति भगिनीश्च सहर्षम् ॥

वयं हि भारतदेशीयाः
प्रदर्शयाम एकताम् ।
संस्कृतेश्च संरक्षका अपि
श्रेष्ठं राष्ट्रं रचयाम ॥

दृष्टि रावत
सप्तमी 'ब'

Grand Parents' Day

स्वच्छता अभियान

कला विभाग

Alka
TGT (Art Education)

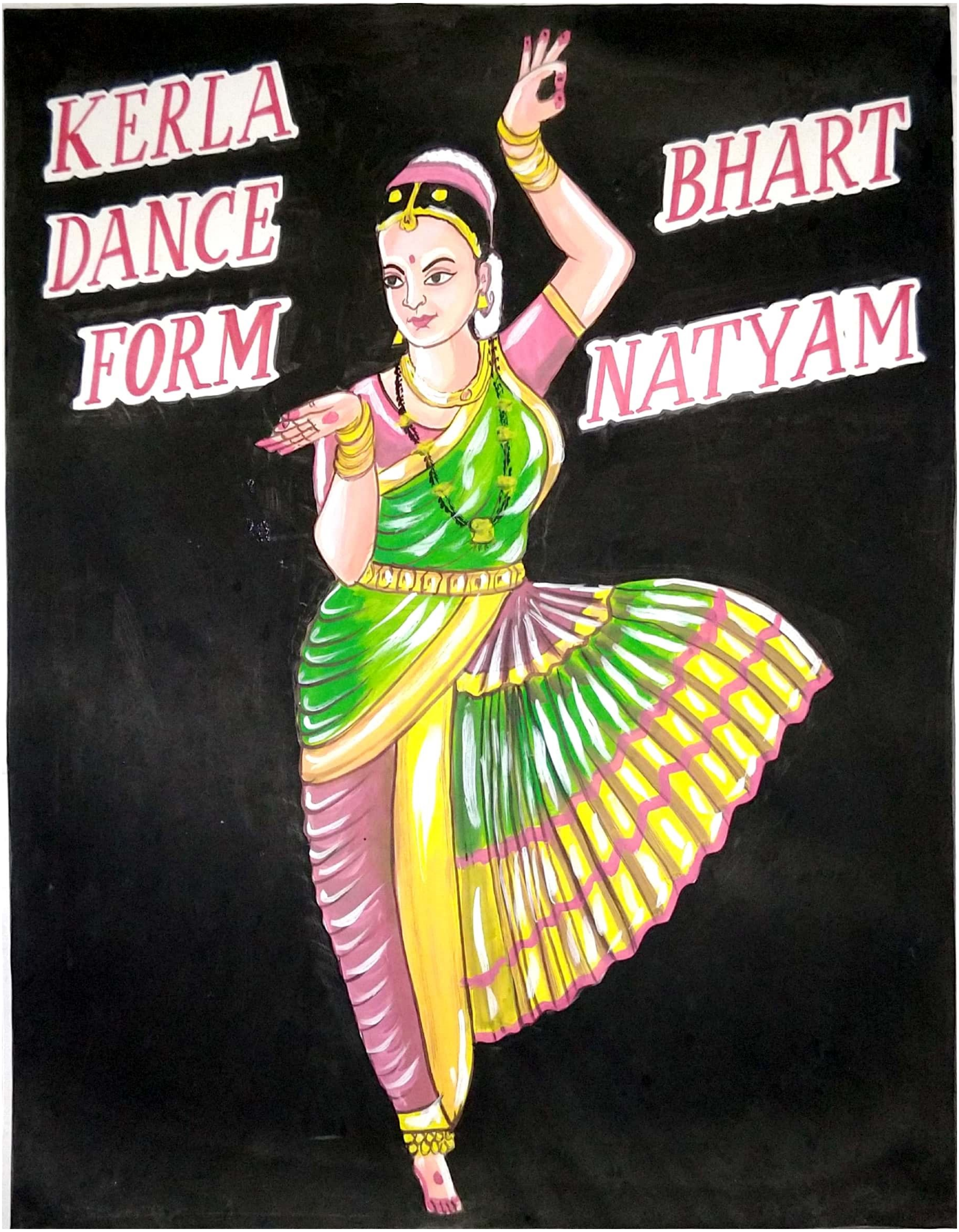

Alka
TGT (Art Education)

Alka

TGT (Art Education)

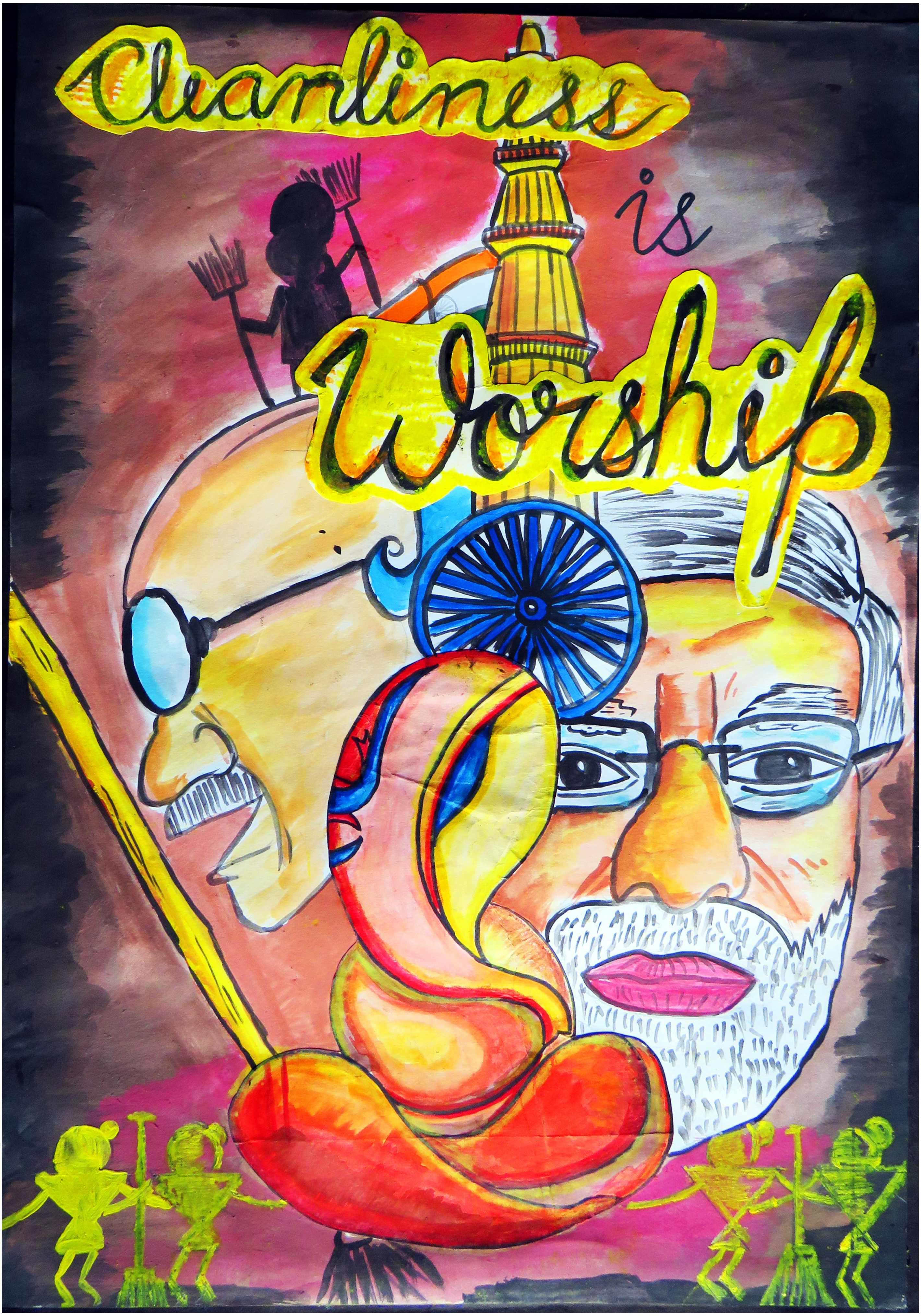

Cleanliness
is
Worship

Shruti Gupta
IX B

स्वच्छ भारत अभियान
INDIA
GATE

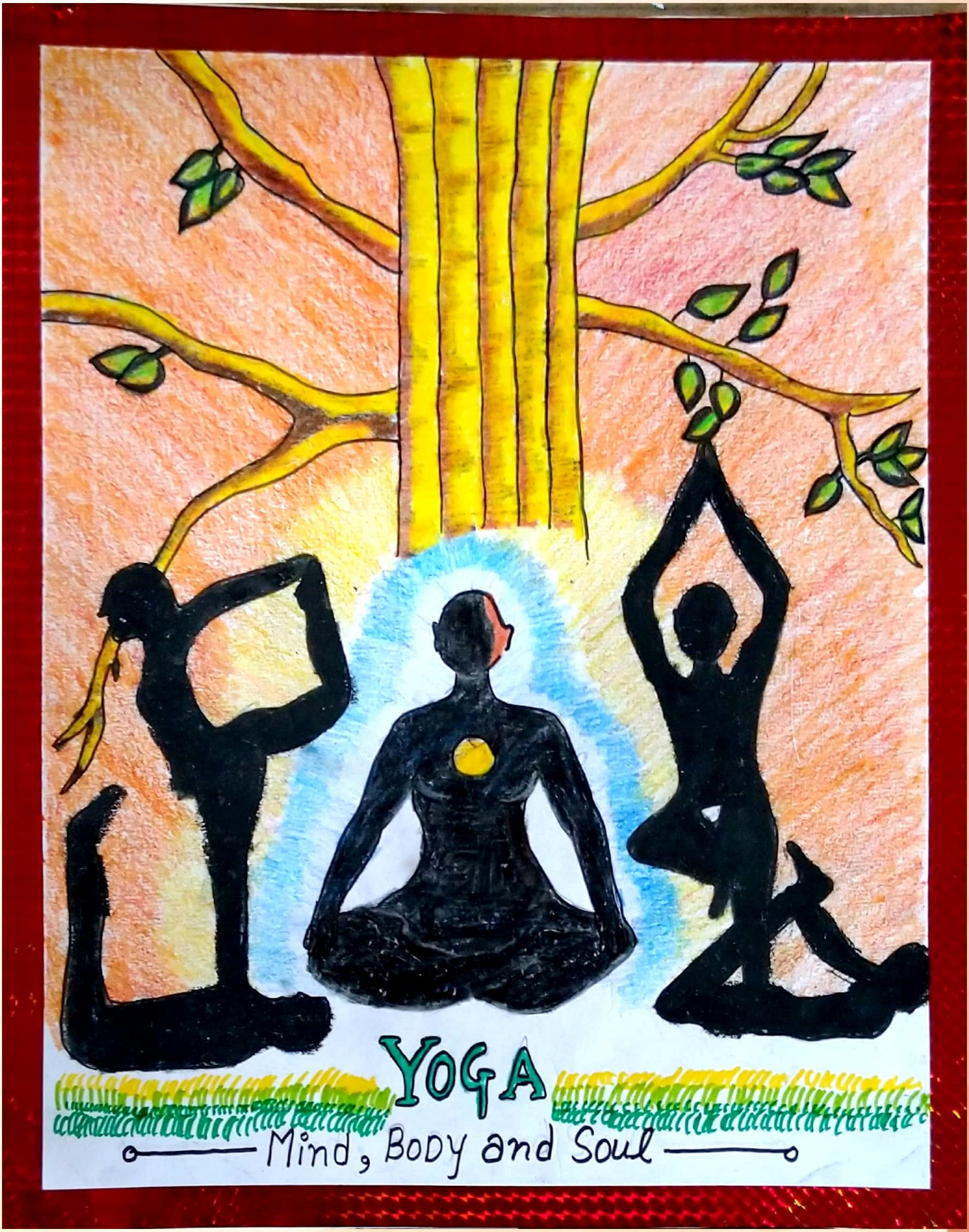

Swati Rawat

VIII B

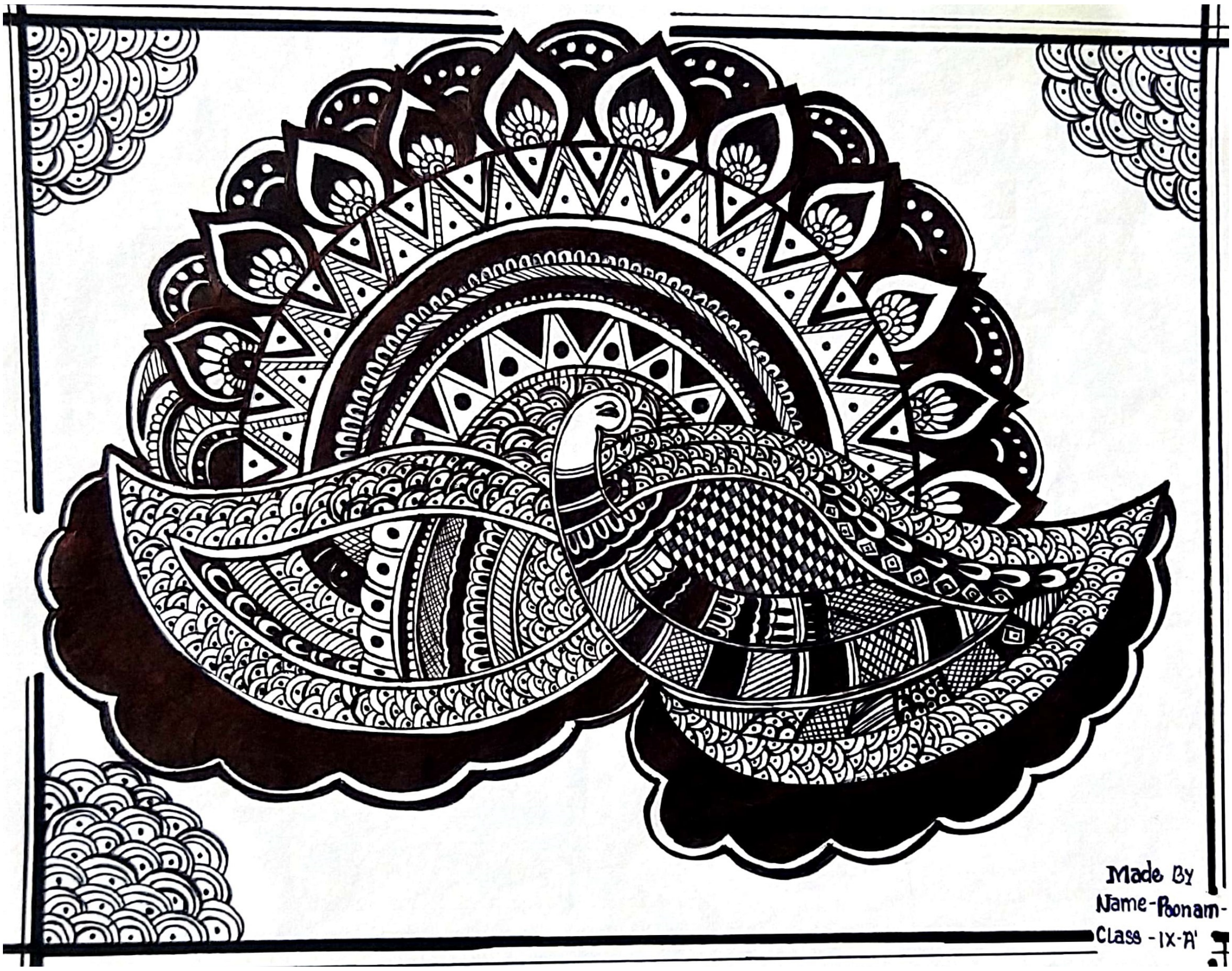

Poonam Dobhal

IX A

Shivangi Rana

XII B

Neetu Kumari

VIII B

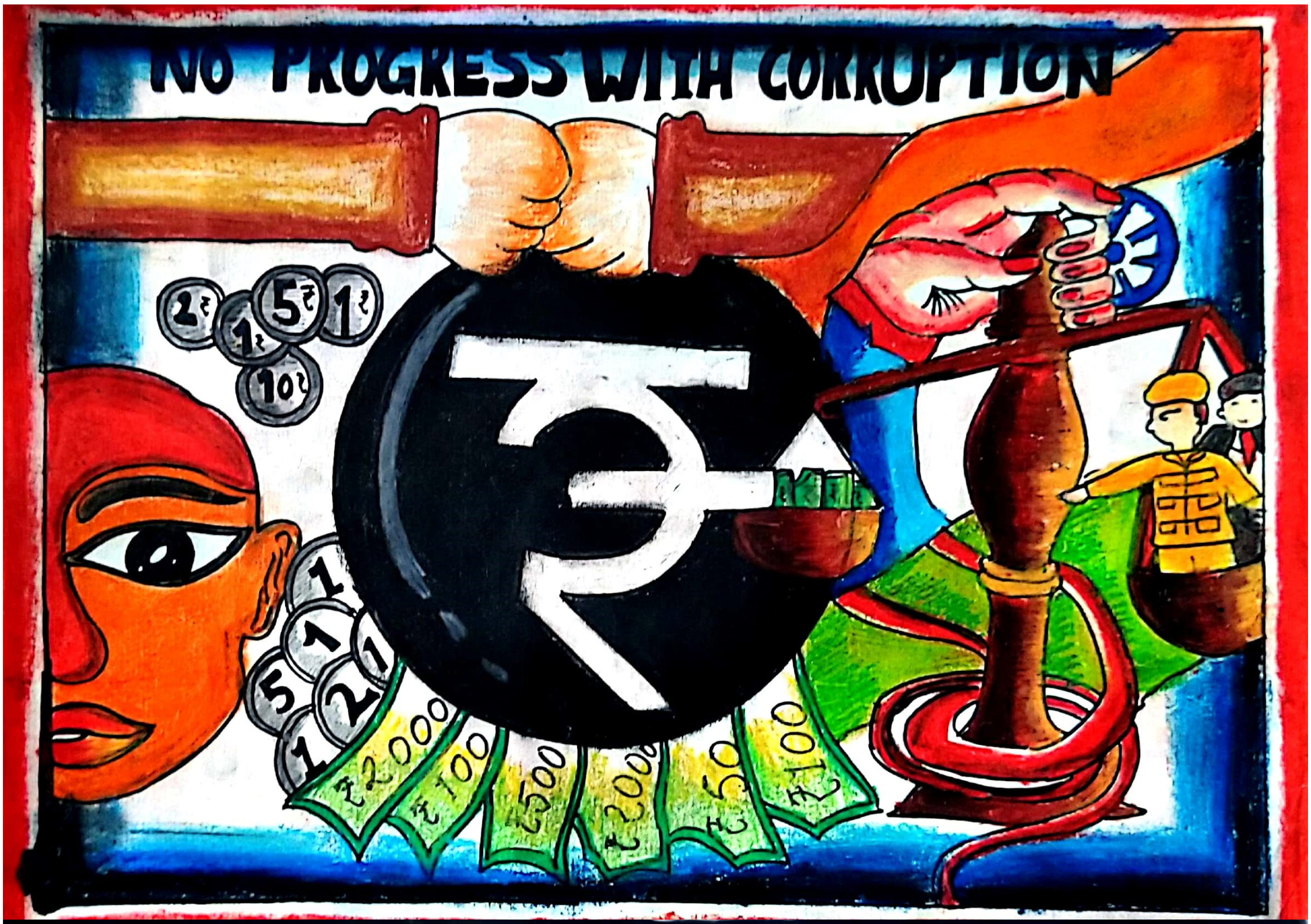

Bhavya Agarwal

IX B

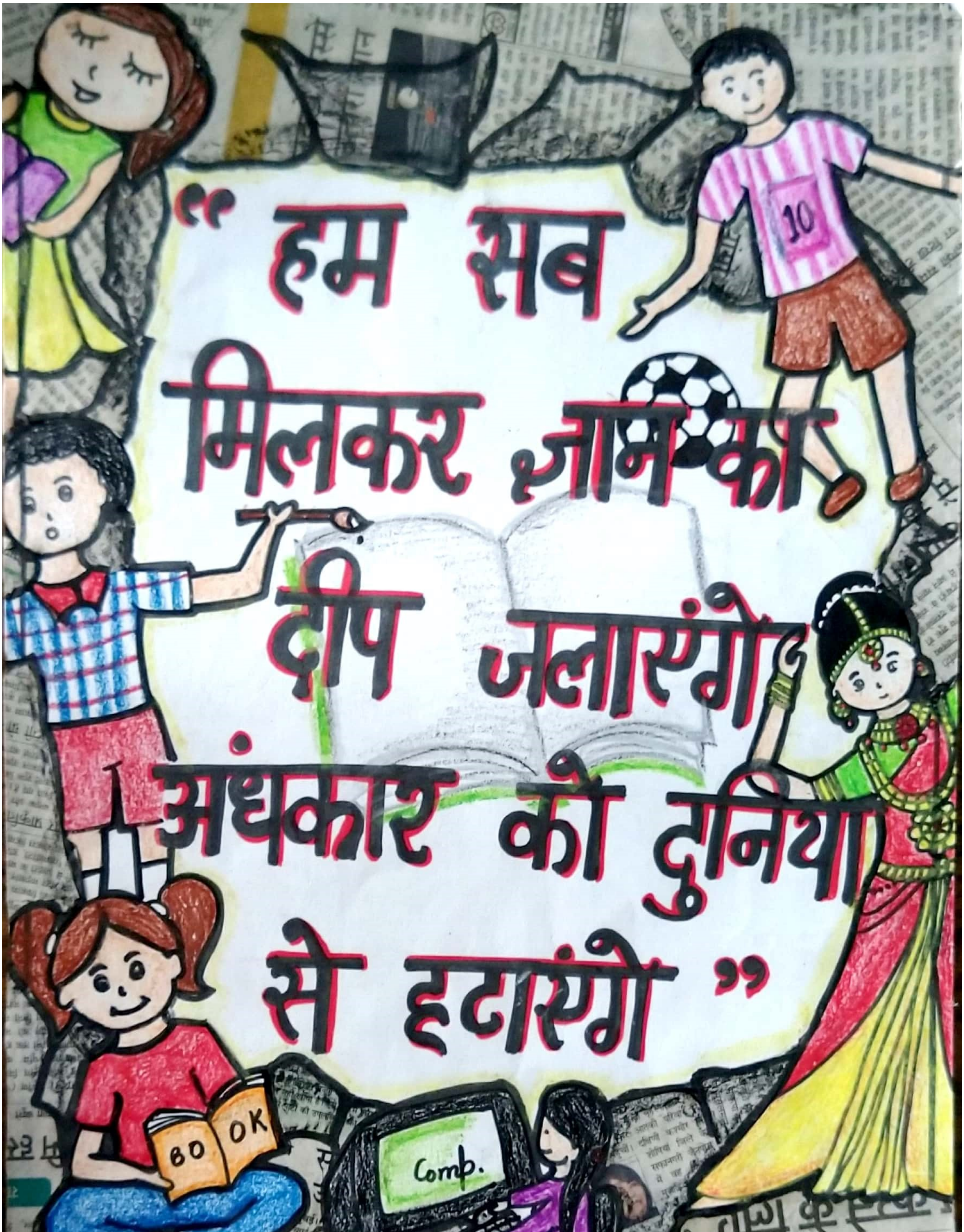

Shivangi Rana

XII B